ISSN 2394-5303

# Printing Area®

Issue-112, Vol-01, April 2024
Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

# INDEX


01) Science of Kundalini in Gyaneshwari: Exploring Spiritual Awakening
**Anant Keshav Rathod, Delhi** ||10

02) Behind the Slogans: Understanding Political Messaging in Indian Politics
**Dr. Manish, Purnia** ||14

03) Analysing the Correlation Between IPO and SME Performance....
**Dr. Shilpa Mishra, Jhansi** ||17

04) भारतीय संघ में अन्तर्राज्यीय परिषद की भूमिका
**अभिनव त्रिपाठी** ||24

05) विशेष गरजू बालक एक संकल्पना अभ्यास
**धाये गणेश मधुकरराव, लातूर** ||27

06) सामान्य माणसांच्या उत्कर्षात आपला उत्कर्ष पाहणारा राजा : राजर्षी शाहु महाराज
**डॉ. जयश्री छगनलाल साळुंखे, देवपूर, धुळे** ||29

07) प्राथमिक स्तरावरील शालेय स्पर्धा परीक्षेतील विद्यार्थ्यांच्या अत्यल्प....
**मिनाक्षी अशोकराव सरदेशमुख, पाडळी ता. जि. बुलडाणा** ||17

08) बीड जिल्ह्यातील भूमी उपयोजन व पिकाखालील क्षेत्र — एक अभ्यास
**प्रा. डॉ. बी.बी. बोबडे, बीड. (महाराष्ट्र)** ||37

09) हरीश चंद्र पाण्डेय : सहमति—असहमति के बीच जीवन—संहति के कवि
**प्रो. चंद्रकांत सिंह, धौलाधार परिसर, जिला—काँगड़ा, हि.प्र** ||40

10) भारत में महिलाओं की आर्थिक स्थिति
**डॉ. अरुणिमा नामदेव, गाडरवारा** ||45

11) सुभाष चन्द्र बोस के राजनीतिक और सामाजिक चिंतन
**डॉ. ऊषा सिंह, बिलासपुर (छ.ग.)** ||48

12) Study of Growth of Health Care facilities in Omerga Taluka in....
**Dr. K.L.Kadam, Dr. J. S. Suryawanshi, Makni, Dist. Dharashiv** ||53


www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

09

# हरीश चंद्र पाण्डेय : सहमति–असहमति के बीच जीवन–संहति के कवि

**प्रो. चंद्रकांत सिंह**
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धौलाधार
परिसर–०१
धर्मशाला, जिला–काँगड़ा, हि.प्र

**सारांश –**

हरीश चंद्र पाण्डेय समकालीन हिंदी कविता के प्रखर हस्ताक्षर हैं। उनकी कविताओं में व्यापक पसरा हुआ जीवन है जो दिक करता है और मुंह चिढ़ाता है। उनकी कविताओं में असहमति है जो जीवन को जीवन रूप में बनाए रखने की जिद करती है। उनकी कविताओं को पढ़ते हुए कोई उन्हें विद्रोही या क्रांतिकारी कह सकता है किंतु उनकी कविताओं की असल पूँजी साधारणता है जिसे उन्होंने विविध दृश्यों के द्वारा बचाना चाहा है। कृत्रिम या बनावटी होना सहज है किंतु अपने मूल्य को बचाते हुए बाजार और समाज में आदमी बने रहना अत्यंत कठिन है। हरीशचंद्र पाण्डेय उस औसत आदमी के कवि हैं जो भीड़तंत्र का हिस्सा होता है किंतु भीड़ नहीं होता, जो बाजार में उछाल देता है किंतु वह बाजार नहीं होता। वह एक आम आदमी होता है जो सामान्य–सा जीवन जीता है और एक दिन चुपचाप जीवन से विदा ले लेता है। उस सामान्य लगने वाले आदमी की जो प्रतीकवत कथा है उसे प्रस्तुत शोध–आलेख में कवि हरीश चंद्र पाण्डेय की कविताओं के सहारे पढ़ने का प्रयास प्रस्तुत आलेख में हुआ है। भाव एवं भाषा के स्तर पर, विषय एवं अंतर्वस्तु के स्तर पर कवि हरीशचंद्र पाण्डेय समकालीन हिंदी कविता में अपनी अलग पहचान रखते हैं जिसे प्रस्तुत आलेख में देखने–समझने का प्रयास हुआ है।

**बीज शब्द –** जनमानस, साधारणता, अनुभव–यथार्थ, सौन्दर्य–बोध, निर्वसन, सहजीवन, मनुष्यत्व

'असहमति' कवि हरीश चन्द्र पाण्डे का महत्वपूर्ण संग्रह है,कवि ने इससे पहले 'एक बुरूंश कहीं खिलता है', एवं 'भूमिकाएँ खत्म नहीं होतीं' जैसे संग्रहों के द्वारा समकालीन हिन्दी काव्य– जगत में अपनी प्रमुख पहचान बनाई है। उनके कवित्व की खासियत है कि उनकी कविताओं में वर्तमान समय की जीवंत उपस्थिति दिखती है। उन्होंने भारतीय जनमानस का सीधा सचिक्कन स्वरूप अपनी कविताओं में उकेरा है। 'असहमति' काव्य–संग्रह को आज के समय की वास्तविक तस्वीर के रूप में देख सकते हैं। एक कवि के रूप में हरीश चन्द्र पाण्डे की बड़ी देन यह है कि उनके यहाँ आज के समय का सच है किंतु इस सच के चित्रांकन में काव्य–शक्ति खत्म नहीं होती, प्रत्युत नई ओप के साथ संवर्धित होती हुई जान पड़ती है। वर्तमान जटिल दौर में कविता की धार के चूक जाने का खतरा अक्सर रहता है। कवियों के समक्ष बड़ी चुनौती है कि वे कविता को रूपवाद के आग्रह से बचाएँ,साथ ही कवित्व में नए विषय–बोध के साथ उपस्थित हों। हरीश चंद्र पाण्डेय न केवल नया विषय–बोध प्रस्तुत करते हैं बल्कि अपने समय को आहिस्ता–आहिस्ता साहित्य में ढालते हैं। जिससे न केवल कवित्व सशक्त होता है अपितु भाषा की सृजनात्मकता भी समय के साथ पकती है। बड़े से बड़े जीवट सत्य का साक्षात्कार करने के बाद कवि हरीश चंद्र पाण्डेय उसे कविता में अत्यंत सादगी के साथ उजागर करते हैं। यही कारण है कि कविता कभी न तो चूकती है और न ही अपना प्रभाव पाठकों पर छोड़ने में असमर्थ होती है। काव्य–रूपक गढ़ते हुए कवि हरीशचंद्र पाण्डेय संयम नहीं खोते, कविता की कलात्मकता की अभिरक्षा करते हुए उकताते भी नहीं है,बल्कि पहले से कहीं अधिक संवेदित रूप में समय की सच्चाईयों को क्रमशः पाठकों के सामने लाते हैं। यही उनके काव्यत्व का मूल है।

'प्यास' कविता में कवि ने पानी पीने की